राज्य कृषि-मौसम विज्ञान केंद्र भोपाल

State Agro-Meteorological Centre Bhopal

भारत मौसम विज्ञान विभाग

India Meteorological Department

कृषि मौसम परामर्श बुलेटिन राज्य : मध्य प्रदेश

बुलेटिन नं. 60/2024

जारी करने का दिन शुक्रवार, 26 जुलाई, 2024

वैधता- 27 जुलाई 2024 से 31 जुलाई 2024 तक

अगला नवीनीकरण: 30.07.2024

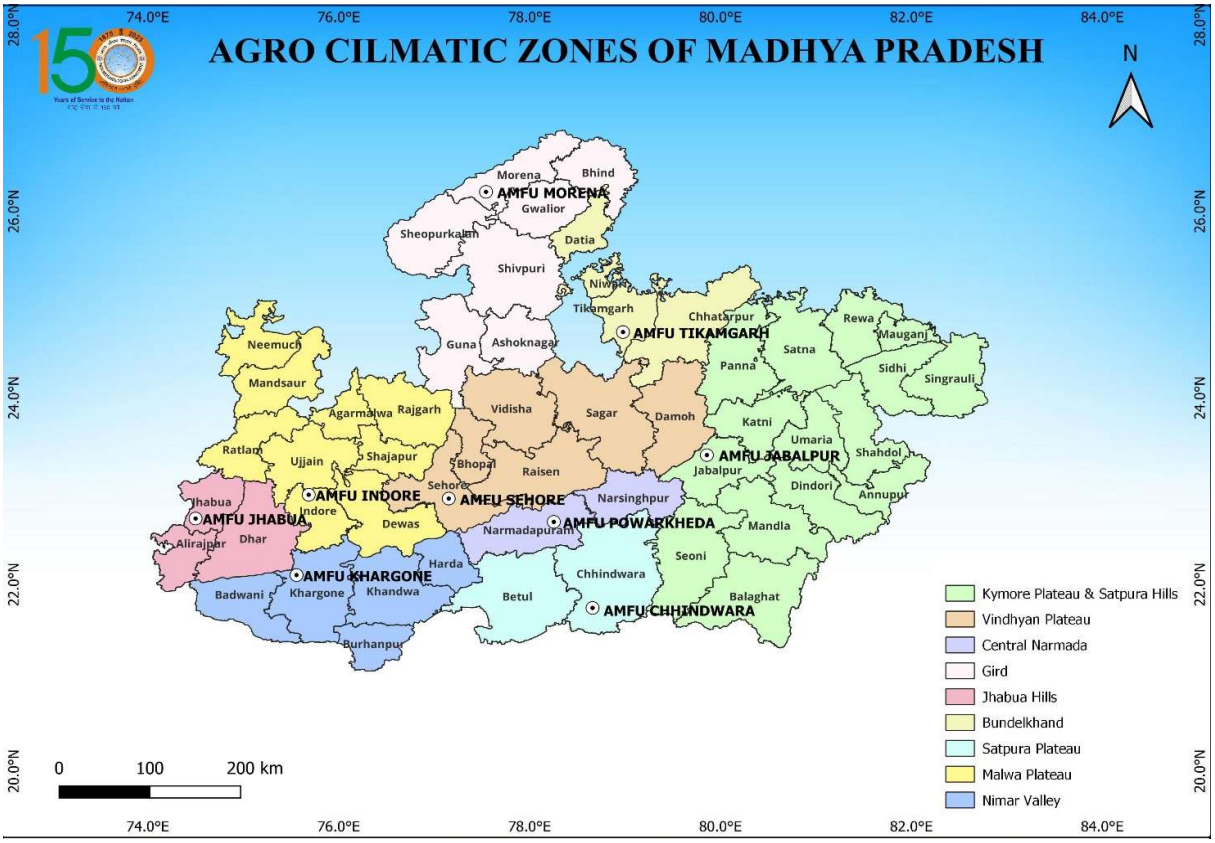

द्वारा : भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम केंद्र, भोपाल

सौजन्य से

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर

राजमाता विजयाराजेय कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर

तथा

कृषि विभाग, मध्य प्रदेश शासन, भोपाल

चेतावनियाँ

26-07-2024

भोपाल, राजगढ़, बैतूल, हरदा, बुरहानपुर, रतलाम, सीधी, सतना, मैहर, शहडोल, उमरिया, कटनी, जबलपुर, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, मंडला, दमोह, छतरपुर, शहडोल, उमरिया, विदिशा, गुना, नर्मदापुरम।जिलों में भारी वर्षा/आंधी के साथ बिजली गिरने की संभावना है।

रायसेन, मुरैना, श्योपुरकलां, शिवपुरी, ग्वालियर, सिवनी, बालाघाट, पन्ना, सागर, सीहोर, पांढुर्ना जिलों में भारी से बहुत भारी वर्षा/आंधी के साथ बिजली गिरने की संभावना है।

27-07-2024

सीहोर, भोपाल, राजगढ़, नर्मदापुरम, बुरहानपुर, खंडवा, खरगोन, धार, इंदौर, देवास, जबलपुर, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, पांढुर्ना, सिवनी, मंडला, बालाघाट, सागर जिलों में भारी वर्षा/आंधी के साथ बिजली गिरने की संभावना है।

विदिशा, रायसेन, बैतूल, हरदा जिलों में भारी से अति भारी वर्षा/आंधी और बिजली गिरने की संभावना है।

28-07-2024

विदिशा, राजगढ़, हरदा, अलीराजपुर, झाबुआ, धार, छिंदवाड़ा, पांढुर्ना जिलों में भारी वर्षा/आंधी के साथ बिजली गिरने की संभावना है।

29-07-2024

राजगढ़, हरदा जिलों में भारी वर्षा/आंधी के साथ बिजली गिरने की संभावना है।

30-07-2024

रायसेन, नर्मदापुरम, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, पांढुर्ना, सिवनी, बालाघाट जिलों में भारी वर्षा/आंधी के साथ बिजली गिरने की संभावना है।

कृषि सलाह

जिलों में कहीं-कहीं भारी/बहुत भारी वर्षा को देखते हुए

- ख़रीफ़ फसलों और सब्जियों से अतिरिक्त पानी निकालने की व्यवस्था करें।
- रासायनिक दवाओं और कीटनाशकों का छिड़काव तभी करें जब कम से कम 4 घंटे तक बारिश की कोई संभावना न हो।
- नई रोपी गई फलों की फसलों को यांत्रिक सहायता प्रदान करें,
- साफ़ मौसम के दौरान ख़रीफ़ फसलों में अंतरसांस्कृतिक कार्य करना।
- ख़रीफ़ फसलों में कीट-पतंगों की सतत् निगरानी रखें।
- रोपे गए धान के खेतों में 1 से 2 सेमी जल स्तर बनाए रखें।

सिनोप्टिक मौसमी परिस्थितियां

- **मानसून ट्रफ** माध्य समुद्र तल से 1.5 किमी की ऊंचाई तक श्री गंगानगर, रोहतक, दिल्ली, आगरा, सीधी, डाल्टनगंज, असनसोल से होकर दक्षिण-पूर्व की ओर निम्न दबाव क्षेत्र के केंद्र तक विस्तृत है।
- गंगयीय पश्चिम बंगाल संलग्न बांग्लादेश पर **चक्रवातीय परिसंचरण के प्रभाव** में उत्तरी बंगाल की खाड़ी, बांग्लादेश के तटीय क्षेत्रों और गंगयीय पश्चिम बंगाल पर **निम्न दाब क्षेत्र** बन गया है। संबद्ध **चक्रवातीय परिसंचरण** माध्य समुद्र तल से 7.6 किमी की ऊंचाई तक ऊपर तक दक्षिण-पश्चिम की ओर झुकाव के साथ सक्रिय है।
- दक्षिण गुजरात-उत्तरी केरल तटों पर माध्य समुद्र तल पर **अपतटीय ट्रफ** अवस्थित है।
- वहीं **विरुपक हवाओ का क्षेत्र (Shear Zone)** 18 °N पर माध्य समुद्र तल से 5.8 और 7.6 किमी के बीच ऊंचाई के साथ दक्षिण की ओर झुकते हुए अवस्थित है।

राज्य में वर्षा का सारांश (23.07.2024 से 25.07.2024):

• इस अवधि के दौरान पूर्वी मध्य प्रदेश में अनेक स्थानों पर बारिश हुई और पश्चिमी मध्य प्रदेश में अधिकाँश स्थानों पर बारिश हुई।

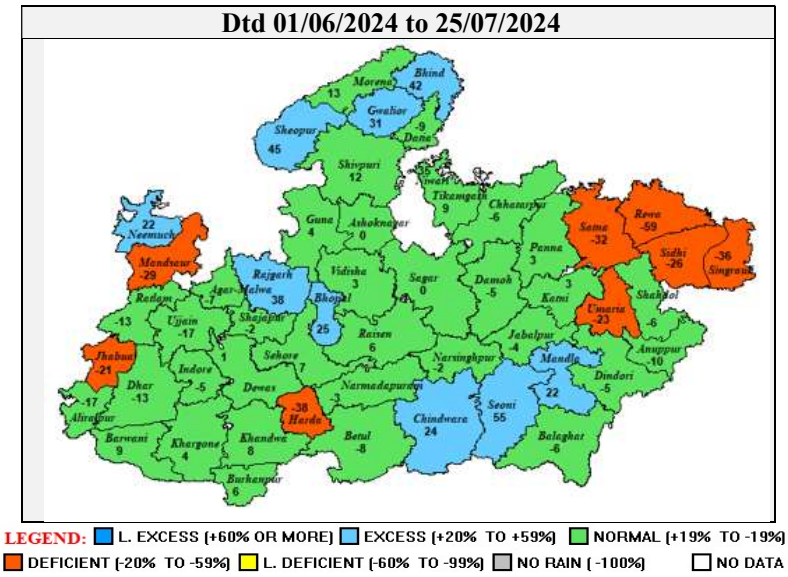

23.07.2024 से 25.07.2024 की अवधि के लिए मौसम मापदंडों का वितरण

AMFU	उच्चतम		सबसे कम	
	अधिकतम तापमान (º C)	जिले का नाम एवं दिनांक	न्यूनतम तापमान (º C)	जिले का नाम एवं दिनांक
छिंदवाड़ा	26.8	24 एवं 25 जुलाई को छिंदवाड़ा	21.8	23, 24 एवं 25 जुलाई को बैतूल
इंदौर	31.8	राजगढ़ 25 जुलाई	21.4	राजगढ़ 24 जुलाई
जबलपुर	37.5	चित्रकोट 23 जुलाई	21.8	24 एवं 25 जुलाई को मंडला
झाबुआ	26.3	23 एवं 25 जुलाई को धार	21.4	धार 24 जुलाई
खरगौन	31.2	बड़वानी 25 जुलाई	21.8	23, 24 एवं 25 जुलाई को खरगोन, खंडवा
मुरैना	35.6	ग्वालियर 25 जुलाई	23.6	23 एवं 25 जुलाई को गुना
पोवारखेड़ा	34	नरसिंहपुर 23 जुलाई	20.4	नरसिंहपुर 24 जुलाई
सिहोर	30	25 जुलाई को भोपाल एवं दमोह	22.6	सागर 25 जुलाई
टीकमगढ	35.7	निवाड़ी 25 जुलाई	24.6	23, 24 और 25 जुलाई को नौगांव

- **उच्चतम अधिकतम तापमान:** 23 जुलाई को चित्रकूट में 37.5 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया ।
- **सबसे कम न्यूनतम तापमान:** 24 जुलाई को नरसिंहपुर में 20.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।
- **सबसे कम आर्द्रता:** 23 से 25 जुलाई को खरगोन में 74% दर्ज की गई।
- **उच्चतम आर्द्रता:** 23 जुलाई को बालाघाट और ग्वालियर में, 24 जुलाई को बालाघाट में और 25 जुलाई को रायसेन और बालाघाट में 100% दर्ज की गई।
- **दिन का तापमान:** राज्य में सामान्य से नीचे रहा।
- **रात का तापमान:** राज्य में सामान्य रहा।

अगले 5 दिनों तक बारिश का अनुमान

उपविभाजन	26-07-2024	27-07-2024	28-07-2024	29-07-2024	30-07-2024
पश्चिमी मध्य प्रदेश	WS	WS	WS	WS	WS
पूर्वी मध्य प्रदेश	WS	WS	WS	WS	WS

ISOL: कहीं-कहीं यानी 1 या 2 स्थानों पर बारिश SCT: छिटपुट यानी कुछ स्थानों पर बारिश
FWS: अनेक स्थानों पर वर्षा WS: अधिकाँश स्थानों पर वर्षा DRY: बारिश नहीं

किसानों को विभिन्न मौसम-आधारित एप्लिकेशन डाउनलोड करने की सलाह दी जाती है जैसे; मौसम आधारित जानकारी प्राप्त करने के लिए आईओएस और गूगल स्टोर से मेघदूत, दामिनी, मौसम।

मध्य प्रदेश की विभिन्न कृषि मौसम क्षेत्र इकाइयों (एएमएफयू) द्वारा जारी कृषि जलवायु क्षेत्रवार/कृषि मौसम सलाह

सामान्य सलाह

- कुछ स्थानों पर भारी/बहुत भारी वर्षा को देखते हुए,
  - किसानों को सलाह दी जाती है कि वे खरीफ फसलों, बगीचों, सब्जियों और चावल और सब्जियों की नर्सरी से जल निकासी की व्यवस्था करें।
  - खुले मौसम की स्थिति तक शाकनाशियों और नाइट्रोजन उर्वरकों के प्रयोग को स्थगित कर दें।
  - यदि सोयाबीन, मक्का आदि के खेतों में खराब अंकुरण देखा जाता है, तो साफ मौसम के दौरान अंतराल भरने का कार्य करें।
- बिजली चमकने के साथ आंधी-तूफ़ान को देखते हुए,
  - कद्दूवर्गीय सब्जियों को स्टेकिंग और समर्थन प्रदान करें।
  - फसल की सतत निगरानी रखें तथा कीट एवं रोगों से बचाव के उपाय करें।
  - साफ़ मौसम के दौरान बाजरा, मक्का और सोयाबीन में निराई और गुड़ाई करें।
- रोपे गए चावल के खेतों में 5 सेमी जल स्तर बनाए रखें,
- पुराने फलदार वृक्षों एवं पिछले वर्ष रोपे गये फलदार वृक्षों में प्रशिक्षण-छंटाई एवं पोषक तत्व प्रबंधन का कार्य पूर्ण कर लिया जाये।
- बगीचों में जल निकासी चैनलों को ठीक किया जाना चाहिए और अच्छी तरह से रखरखाव की स्थिति में रखा जाना चाहिए।

चावल

- रोपाई वाले धान में पहली बार यूरिया की टॉप ड्रेसिंग 15 से 21 दिन बाद करें।

• 21-25 दिन पुराने धान के पौधों की रोपाई करें और खेतों में 2 से 3 सेमी का इष्टतम जल स्तर बनाए रखें।

अरहर

• अरहर में बांझपन मोज़ेक रोग को फैलने से रोकने के लिए साफ मौसम में सल्फर 50% (डब्ल्यूपी) 30 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी या नीम का तेल 40 मिलीलीटर 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

कपास

• उर्वरकों की बेसल खुराक - 30:60:60 एनपीके किग्रा/हेक्टेयर बुआई के समय लगानी चाहिए।

• रस चूसने वाले कीट का संक्रमण होने पर: वर्टिसिलियम लैकेन 50 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

• एक महीने पुरानी कपास की फसल में सिंचित बीटी कपास के लिए 40 किग्रा एन/हेक्टेयर, सिंचित संकर कपास के लिए 35 किग्रा एन/हेक्टेयर, वर्षा हुई बीटी कपास और देसी संकर कपास के लिए 30 किग्रा एन/हेक्टेयर की दर से नाइट्रोजन की टॉप ड्रेसिंग करें। साफ़ मौसम के दौरान देसी उन्नत किस्म के लिए 20 किग्रा एन/हेक्टेयर।

सोयाबीन

• किसानों को सलाह दी जाती है कि वे सोयाबीन में मोनोकोट/डाइकोट खरपतवारों के प्रबंधन के लिए उपयुक्त उपाय (डोरा/कुल्पा के साथ इंटरकल्चर ऑपरेशन या मैन्युअल निराई या अनुशंसित शाकनाशी का उपयोग) अपनाएं।

• सोयाबीन में खरपतवार प्रबंधन के लिए बुआई के 20-25 दिन बाद उगने पर इमेजेथापायर 10% एसएल @ 250-300 मिली/एकड़ का छिड़काव करें।

• किसानों को सलाह दी जाती है कि यदि फूल आने लगें तो किसी भी प्रकार के शाकनाशी का छिड़काव न करें।

अगेती फूलगोभी, टमाटर, मिर्च एवं बैंगन

• बीज को कैप्टान 2.0 ग्राम/किग्रा बीज से उपचारित कर नर्सरी में बोना चाहिए।

• नर्सरी बेड की ऊंचाई 5-6 इंच और चौड़ाई 3 फीट होनी चाहिए।

मक्का

• मक्के की फसल में खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए बुआई के 18-21 दिन बाद उगने पर मक्के के लिए टेम्बोट्रायोन 42% एससी 115 मि.ली./एसर का छिड़काव करें।

• पर्याप्त नमी सुनिश्चित करने के बाद पर्याप्त बारिश होने पर ही बुआई के 25 दिन बाद मक्के की फसल में नाइट्रोजन को विभाजित खुराक में डालें।

• पक्षियों के बैठने के लिए 100/एकड़ की दर से टी आकार की खूंटियाँ स्थापित करें।

ज्वार

• साफ मौसम के दौरान 25-30 दिन पुराने ज्वार में 40 किलोग्राम एन/हेक्टेयर की दर से नाइट्रोजन उर्वरक की शीर्ष ड्रेसिंग के बाद निराई-गुड़ाई करें।

कृषि जलवायु क्षेत्र	फसल अवस्था				
	सोयाबीन	धान	कपास	मक्का	मिर्च
सतपुड़ा पठार	पूर्व पुष्पन		पत्ती क्षेत्र छत्र विकास	घुटने की ऊंचाई अवस्था (सात पत्ती कॉलर)	रोपाई
मध्य नर्मदा	वनस्पतिक अवस्था	वनस्पतिक अवस्था		वनस्पतिक अवस्था	
निमाड़ घाटी	वनस्पतिक अवस्था	धान की रोपाई	पुष्पण अवस्था	वनस्पतिक अवस्था	रोपाई
झाबुआ पहाड़ियाँ	वनस्पतिक		वनस्पतिक	वनस्पतिक	
क्यमोर पठार और सतपुड़ा हिल्स	वनस्पतिक	रोपाई		वनस्पतिक	
बुंदेलखंड		रोपाई		वनस्पतिक	वनस्पतिक

मालवा पठार	वनस्पतिक अवस्था	रोपाई		वनस्पतिक अवस्था	रोपाई
विंध्यान पठार	वनस्पतिक	रोपाई		वनस्पतिक	
गिर्द		रोपाई			फल की अवस्था

सतपुड़ा पठारकृषि जलवायु क्षेत्र: एग्रोमेट फील्ड इकाइयाँ, छिंदवाड़ा (बैतूल और छिंदवाड़ा**)**

- जिलों में कहीं कहीं स्थानों पर भारी वर्षा को देखते हुए
  - दलहन, तिलहन एवं सब्जियों में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।
  - सोयाबीन में प्रारंभिक अवस्था में कैटरपिलर के नियंत्रण के लिए 'टी' या 'वाई' आकार के 2 से 2.5 फीट ऊंचाई के पक्षी आसन @ 20-25 और फेरोमोन जाल @ 8 जाल प्रति एकड़ का उपयोग करें। यदि हमला बढ़ रहा है (एक वर्ग मीटर में 2-3 कैटरपिलर पाए जाते हैं), तो फसल को अगले 25-30 दिनों तक डिफोलिएटर के हमले से बचाने के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी का छिड़काव करें।
  - कपास में लीफ हॉपर नियंत्रण के लिए फ्लोनिकैमिड 50 डब्लूजी @ 80 ग्राम या डिनोटफेरान 20%एसजी 60 ग्राम प्रति एकड़ का छिड़काव करें। कपास के खेतों में रस चूसक कीट का संक्रमण देखा गया है। इसलिए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे वर्टिसिलियम लैकेन 50 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
  - अगेती फूलगोभी, टमाटर, मिर्च एवं बैंगन की नर्सरी की रोपाई करें।
  - कपास के खेतों में रस चूसक कीट का संक्रमण देखा गया है। इसलिए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे वर्टिसिलियम लैकेन 50 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
  - हानिकारक कीड़ों और बीमारियों के लिए कद्दूवर्गीय सब्जियों की निगरानी करें और बेलों को खराब होने/सड़ने से बचाने के लिए प्रशिक्षण/चढ़ाई की व्यवस्था करें।
  - वर्षा ऋतु के फूलों के पौधों को खेत में रोपना चाहिए।
  - वर्षा ऋतु की सब्जियों की रोपाई खेत में करनी चाहिए।
  - खरीफ सब्जियों की बुआई के लिए मौसम अनुकूल है। किसानों को मिट्टी परीक्षण के आधार पर उर्वरकों का प्रयोग करने की सलाह दी जाती है।
  - वर्तमान मौसम की परिस्थितियाँ बागवानी फसलों जैसे पपीता, आम, अमरूद आदि के रोपण के लिए अनुकूल हैं। किसानों को जल्द से जल्द रोपण करने की सलाह दी जाती है।
  - फलों के पौधे की नई पौध को अनुशंसित ज्यामिति, उर्वरक और खाद के साथ गड्ढे में प्रत्यारोपित किया जाना चाहिए।

मध्य नर्मदाकृषि जलवायु क्षेत्र: एग्रोमेट फील्ड इकाइयाँ,पोवारखेड़ा (नरसिंहपुर, होशंगाबाद)

- वर्षा और कहीं-कहीं स्थानों पर भारी वर्षा की आशंका को देखते हुए
  - गन्ना (वानस्पतिक वृद्धि अवस्था) और सोयाबीन, मक्का, बैंगन, मिर्च, टमाटर और भिंडी जैसी खरीफ फसलों में जल निकासी की उचित व्यवस्था करें।
  - धान की रोपाई पूरी करें.

झाबुआ पहाड़ियाँकृषि जलवायु क्षेत्र: एग्रोमेट फील्ड इकाइयाँ, झाबुआ (झाबुआ, अलीराजपुर, धार)

- वर्षा और कहीं-कहीं स्थानों पर भारी वर्षा की आशंका को देखते हुए
  - खरीफ सब्जियों की रोपाई करें।
  - यदि पीपीआई या पीई शाकनाशी का उपयोग किया जाता है, तो बुआई के 20-25 दिन बाद डोरा/कुलपा का उपयोग करने की सलाह दी जाती है।
  - मक्का, सोयाबीन, उड़द में जल निकास नालियाँ बनायें।
  - मक्का, कपास एवं सोयाबीन में खरपतवार नियंत्रण करें।
  - मक्के में तना छेदक कीट की सतत निगरानी रखें।
  - मक्का एवं सोयाबीन में लाल बालों वाली इल्ली की सतत निगरानी रखें। यदि पाया जाए तो क्विनालफॉस 1.5 लीटर/हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
  - खरपतवार नियंत्रण के बाद नाइट्रोजन उर्वरक की अनुशंसित खुराक का 1/10 भाग यूरिया के रूप में फसल के 20-25 दिन पर दें।
  - बीटी कपास में रस चूसने वाले कीट को नियंत्रित करने के लिए थायोमिथॉक्सिम 5.0-7.5 ग्राम/पंप (0.35-0.5 ग्राम/लीटर) का छिड़काव करें।
  - धान की पौध की रोपाई पूरी करें।
  - टमाटर, बैंगन, मिर्च, भिंडी में प्ररोह और फल छेदक कीट के नियंत्रण के लिए इमाबैक्टिन बेंजोएट @ 10 मि.ली./पंप का छिड़काव करें।
  - सब्जी की फसल, अदरक और हल्दी आदि के खेत में उचित जल निकासी चैनल तैयार करें और साफ मौसम के दौरान उर्वरकों की अनुशंसित खुराक समय पर दें।
  - फलदार वृक्ष लगाएं।

बुंदेलखंडकृषि जलवायु क्षेत्र :एग्रोमेट फील्ड इकाइयाँ, टीकमगढ (दतिया, टीकमगढ़, छतरपुर)

- चूँकि अगले पाँच दिनों के दौरान मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
  - खरीफ फसलों विशेषकर सोयाबीन, मूंग, अरहर, उर्द, तिल और मूंगफली आदि में निराई-गुड़ाई करें, साथ ही कीट-पतंगों से बचाव के लिए फसलों की नियमित निगरानी करें।
  - टमाटर, मिर्च और बैंगन के तैयार पौधों की रोपाई का काम खेत में पूरा कर लें.
  - सोयाबीन, मूंगफली एवं तिल आदि फसलों में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।
  - किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कद्दूवर्गीय सब्जियों की फसलों (बरसात के मौसम) में कीट-पतंगों और बीमारियों की निगरानी करें और खड़े पानी में कद्दूवर्गीय सब्जियों को सड़ने से बचाने के लिए पौधों को सहारा भी दें (ऊपर चढ़ें)।
  - पपीता, करौंदा, फालसा आदि में बीज प्रवर्धन करें।
  - बैंगन की फसल में फल छेदक कीट की निरंतर निगरानी करें।
  - पान की फसल में पत्ती सड़न रोग की निरंतर निगरानी करें। जल जमाव की स्थिति से बचें.

गिर्द कृषि जलवायु क्षेत्र : एग्रोमेट फील्ड इकाइयाँ, मुरैना (मुरैना, भिंड, ग्वालियर, शिवपुरी, गुना, श्योपुर, अशोकनगर)

- कहीं-कहीं स्थानों पर भारी वर्षा (26/07/2024) की आशंका को देखते हुए
  - साफ़ मौसम में ख़रीफ़ फसलों में उर्वरक डालें।

- बाजरा एवं मूंग की बुआई साफ मौसम में करें।
- साफ़ मौसम में निराई-गुड़ाई करें।
- अरहर, काला चना, हरा चना और सब्जियों जैसी फसलों में अतिरिक्त पानी की उचित निकासी करें।
- धान की पौध की रोपाई करें।,
- मिर्च एवं टमाटर में लीफ कर्ल (चुर्रमुर्रा रोग) के नियंत्रण के लिए थायोमेथाक्सम 25 डब्लू.जी. 100 ग्राम दवा को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।
- भिंडी में फल छेदक कीट के नियंत्रण के लिए स्पिनोसैड 48 ईसी का छिड़काव करें। @ 1.0 मिली प्रति 4 लीटर पानी।
- बैंगन की फसल में तना और फल छेदक कीट को नियंत्रित करने के लिए स्पिनोज्ड 48 ईसी @ 1 मिली/ 4 लीटर पानी का छिड़काव करें।
- टमाटर, बैंगन, मिर्च एवं अगेती फूलगोभी की तैयार पौध को पहले से तैयार खेत में रोपें तथा अतिरिक्त वर्षा जल के निकास के लिए जल निकासी की व्यवस्था करें।
- नए फलदार पौधे लगाने का यह सही समय है, अत: तैयार गड्ढों में आम, अमरूद, आंवला, जामुन आदि के पौधे लगाएं तथा अतिरिक्त वर्षा जल के निकास के लिए उचित जल निकास की व्यवस्था करें।

मालवा पठारकृषि जलवायु क्षेत्र : एग्रोमेट फील्ड इकाइयाँ, इंदौर (उज्जैन, इंदौर, मंदसौर, रतलाम, शाजापुर, देवास, राजगढ़, नीमच**)**

• वर्षा और कहीं-कहीं स्थानों पर भारी वर्षा की आशंका को देखते हुए

- सोयाबीन एवं मक्का में अतिरिक्त पानी की निकासी करें।
- खरीफ सब्जियों की रोपाई करें।
- मिर्च की फसल की रोपाई करें।

निमाड़ घाटीकृषि जलवायु क्षेत्र: एग्रोमेट फील्ड इकाइयाँ, खरगौन(खरगौन, बुरहानपुर, हरदा, खंडवा, बड़वानी**)**

• वर्षा और कहीं-कहीं स्थानों पर भारी वर्षा की आशंका को देखते हुए

- कपास, सोयाबीन, मिर्च, अरहर तथा मक्का में अतिरिक्त पानी की निकासी खेत में नालियाँ बनाकर करें।
- सोयाबीन में उर्वरक साफ मौसम में डालें।
- ख़रीफ़ की फसल में साफ़ मौसम में निराई-गुड़ाई करें।
- यदि पीपीआई या पीई शाकनाशी का उपयोग किया जाता है, तो बुआई के 20-25 दिन बाद डोरा/कुलपा का उपयोग करने की सलाह दी जाती है।
- कपास की फसल में मुरझाने की सतत निगरानी रखें। यदि पाया जाए तो प्रति लीटर पानी में कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2.5 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम + 20 ग्राम यूरिया या हेक्साकोनोजोल 2 मिलीलीटर मिलाकर पौधे को तर करें।
- यदि कपास में पैरा विल्ट के लक्षण दिखाई दें तो साफ मौसम में कार्बेन्डाजिम 50%WP @ 20 ग्राम या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 25 ग्राम + यूरिया 100 ग्राम को 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। मिर्च की फसल की रोपाई अवश्य करें।
- मिर्च की फसल के चारों ओर 2-3 मक्के की कतारें बॉर्डर फसल के रूप में उगाएं और मिर्च की हर 15 कतारों पर गेंदा लगाएं।

क्यमोर पठार और सतपुड़ा हिल्सकृषि जलवायु क्षेत्र :
एग्रोमेट फील्ड इकाइयाँ, जबलपुर (जबलपुर, सतना, पन्ना, सिवनी, रीवा, सीधी, कटनी, अनूपपुर, सिंगरौली, बालाघाट, उमरिया, मंडला, डिंडोरी, शहडोल)

- वास्तविक वर्षा और अलग-अलग स्थानों पर (अगले दो दिनों के दौरान) भारी वर्षा की संभावना को देखते हुए
  - भारी वर्षा वाले क्षेत्र में चावल की नर्सरी में एन उर्वरक की दूसरी खुराक का प्रयोग स्थगित कर दें।
  - रोपाई वाले धान में पहली बार यूरिया की टॉप ड्रेसिंग 15 से 21 दिन बाद करें
  - 21-25 दिन पुरानी धान की पौध की रोपाई करें।
  - रोपे गए धान के खेतों में 5 सेमी जल स्तर बनाए रखें,
  - सोयाबीन, मूंग में खरपतवार नियंत्रण साफ मौसम में करें।
  - उर्वरक का प्रयोग साफ़ मौसम में करें।
  - नई रोपी गई फलों की फसलों को यांत्रिक सहायता प्रदान करें,
  - पुराने फलदार वृक्षों एवं पिछले वर्ष लगाये गये फलदार वृक्षों का प्रशिक्षण-छंटाई एवं पोषक तत्व प्रबंधन का कार्य पूर्ण कर लिया जाये।

विंध्यान पठारकृषि जलवायु क्षेत्र: एग्रोमेट फील्ड इकाइयाँ, सिहोर (सागर, भोपाल, सिहोर, रायसेन, विदिशा, दमोह)

- कहीं-कहीं स्थानों पर भारी वर्षा की आशंका को देखते हुए
  - फसल के खेत में उचित जल निकास नाली बनायें।
  - उर्वरक और कीटनाशक साफ दिन पर डालें।
  - सोयाबीन एवं चावल में खरपतवार नियंत्रण करें।
  - खरीफ फसलों में अंतरवर्तीय क्रियाएं एवं खरपतवार नियंत्रण करें।

पशु परामर्श

- मवेशियों को छाया में रखना चाहिए और दिन में दो बार साफ और ताजा पानी देना चाहिए।
- एफएमडी और एचएस रोग के नियंत्रण के लिए मवेशियों का टीकाकरण करें
- पोषक तत्वों की पूर्ति के लिए पशु के अनुसार हरा चारा और खनिज मिश्रण उपलब्ध कराएं, सभी दूध उत्पादक पशुओं को घर पर ही रखें और घास खिलाएं।
- किसानों को सलाह दी जाती है कि वे डेयरी पशुओं के बछड़ों को कृमिनाशक दवा दें।
- मच्छरों और अन्य कीड़ों से बचाव के लिए पशुशाला में धुआं बनाएं।